जिस समय इन सब द्वारों में प्रकाश छा जाय, उस समय समझना चाहिये कि सत्त्वगुण का विकास हुआ है। सत्त्वगुणी यथार्थ श्रवण करता है, यथार्थ देखता है और यथार्थ चखता है। बाहर-भीतर, दोनों ही प्रकार से वह शुद्ध हो जाता है। उसके प्रत्येक इन्द्रियरूप द्वार में सुख के लक्षण प्रकट होते हैं। यही सात्त्विकी अवस्था है।

लोभः प्रवृत्तिरारम्भः कर्मणामशमः स्पृहा।
रजस्येतानि जायन्ते विवृद्धे भरतर्षभ।।१२।।

लोभः=लोभ; **प्रवृत्तिः**=नाना प्रयत्न करना; **आरम्भः**=उद्यम; **कर्मणाम्**=कर्मों का; **अशमः**=मन की चंचलता; **स्पृहा**=विषय भोगों की वासना; **रजसि**=रजोगुण में; **एतानि**=ये सब लक्षण; **जायन्ते**=प्रकट होते हैं; **विवृद्धे**=बढ़ने से; **भरतर्षभ**=हे अर्जुन।

अनुवाद

और हे अर्जुन! रजोगुण के बढ़ने पर लोभ, प्रवृत्ति अर्थात् लौकिक प्रयत्न, नाना कर्मों का उद्यम, मन की चंचलता तथा विषय-वासना—ये सब लक्षण प्रकट होते हैं।।१२।।

तात्पर्य

रजोगुणी अपनी प्राप्त स्थिति से कभी सन्तुष्ट नहीं होता; संसार में सदा अभ्युत्थान करते रहना चाहता है। यदि उसे घर का निर्माण करना हो तो वह महल सा बनाने के लिए यथाशक्ति पूरा प्रयत्न करता है, मानो वह सदा के लिए उसमें निवास कर सकेगा। उसकी विषय-वासना भी बहुत अधिक बढ़ जाती है। इन्द्रियतृप्ति की कोई अवधि-परिधि नहीं होती; अपने घर-परिवार में बने रह कर विषयभोग के द्वारा वह सदा इन्द्रियतृप्ति ही करते रहना चाहता है। इसका अन्त कभी नहीं आता। ये लक्षण रजोगुण के द्योतक हैं।

अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्च प्रमादो मोह एव च।
तमस्येतानि जायन्ते विवृद्धे कुरुनन्दन।।१३।।

अप्रकाशः=अन्धकार (विवेक का अभाव); **अप्रवृत्तिः**=चेष्टामात्र का त्याग (निष्क्रियता); **च**=तथा; **प्रमादः**=प्रमाद; **मोहः**=अज्ञान; **एव**=निस्सन्देह; **च**=भी; **तमसि**=तमोगुण के; **एतानि**=ये सब; **जायन्ते**=अभिव्यक्त होते हैं; **विवृद्धे**=बढ़ने पर; **कुरुनन्दन**=हे अर्जुन।

अनुवाद

हे कुरुनन्दन! तमोगुण का विकास होने पर प्रमाद, मोह, क्रियाहीनता और अन्धकार की अभिव्यक्ति होती है।।१३।।

तात्पर्य

जहाँ प्रकाश नहीं है, वहाँ ज्ञान का अभाव है। तमोगुणी शास्त्र-विधि के अनुसार कर्म नहीं करता, वरन् स्वेच्छा से व्यर्थ कर्म ही करना चाहता है। अथवा कर्म